कजरी बन

लक्ष्मीनारायण लाल

22 मई,'80

प्रिय डॉ.लाल,

'लायनेस क्लब' के लिए आपकी विशेष नाट्य रचना 'कजरी बन' की परम श्रेष्ठता और सफलता के प्रति हम सब आपके अति कृतज्ञ हैं। आपने जिस कला–निष्ठा, धैर्य, परिश्रम और संकल्प के साथ 'लायने क्लब' की सदस्याओं से इतना प्रभावशाली, सफल और श्रेष्ठ प्रदर्शन हमें दिया, उसके प्रति हम सदैव आपके ऋणी हैं। इससे हमारे क्लब के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण अध्याय का शुभारंभ हुआ। आपकी इस अर्थवान, माननीय संवेदनाओं से पूर्ण रचना से हम सब गौरवान्वित हुए हैं।

'लायन्स' जगत में यह अपनी तरह का पहला सफल प्रयास है जहां जीवन और कला के धरातल को एक ऊंचाई और शक्ति प्रदान करने का संकल्प है।

मेरा विश्वास है कि सभी 'लाइनेस क्लब' इस नाटक को अपने यहां सहर्ष प्रस्तुत करेगे। और इससे प्रेरणा लेकर अन्य सभी महिला संस्थाएं, संगठन 'कजरी बन' नाटक को खेलेंगे, क्योंकि इसमें सभी पात्र नारी पात्र हैं, और नारी चरित्र का शक्तिशाली स्वरूप इसमें उजागर है। डॉ.लाल, इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए हमारा हार्दिक आभार स्वीकार कीजिए।

कृतज्ञता सहित आपका,
हरचरन सिंह सेठी
डिस्ट्रिक्ट गवर्नर
लाइन्स क्लब्स इण्टरनेशनल–321 ए

□□□□

शुभ संयोग

एक ऐसे नाटक की मांग मुझसे लगातार होती रही जिसमें सब स्त्री पात्र हों। यह आग्रह, यह मांग विशेषकर स्वभावतः स्त्री वर्ग, जाग्रत् नारी समाज की ओर से होती रही है–महिला कॉलेजों, संस्थाओं और अनेक नारी संगठनों से। मेरी इच्छा होती थी कि हां, ऐसा नाटक जरूर होना चाहिए–क्यों नहीं–जिसमें सारे नारी चरित्र हों। जबकि ऐसे नाटक हैं, जिसमें केवल पुरूष पात्र हैं।

यह कितनी सुखद चुनौती है कि आज स्त्री ऐसे नाटक की भी मांग कर रही है। पर यह कार्य इतना आसान नहीं। केवल पुरूष पात्रों से बड़े स्वाभाविक ढंग से नाटक लिख और प्रस्तुत किये जा सकते हैं, जिसमें स्त्री पात्र की कोई कमी नहीं महसूस होती–या कोई कमी नहीं खटकती। क्योंकि पुरूष जीवन में नाटक है, तमाम नाटकीय स्थितियां हैं, संधर्ष और युद्ध हैं जो पुरूष संबंधों और पात्रों के द्वारा प्रस्तुत है। पर पुरूष पात्र बिना, केवल स्त्री पात्रों से नाटक खड़ा करना आसान नहीं है। जीवन को देखिए न, पुरूष बिना जीवन नाटक का परदा ही नहीं उठता। जबरदस्ती केवल स्त्री पात्रों के साथ नाटक लिखना और करना सरासर आरोपण है–बनावटी, जबरदस्ती का काम है। तो मैं काफी समय से एक सहज – स्वाभाविक जीवन यथार्थ, जीवन अनुभव और भाव की रचनात्मक खोज और सृष्टि की पीड़ा में था–जहां स्त्री समाज है, स्त्री पात्र हैं और उन्हीं में उनका सहज नाटक है। ऐसा सहज संपूर्ण नाटक जहां पुरूष पात्र की प्रत्यक्ष कमी ही नहीं महसूस हो। समाज माने जहां स्त्री पुरूष दोनों हैं। स्त्री समाज माने जहां प्रत्यक्ष सामने स्त्री है और पुरूष अद्रश्य एवं अप्रत्यक्ष है।

सौभाग्य से ऐसी स्त्री समाज मुझे मिला। मेरे अनुभव का अंग हुआ। पर समाज में नाटक रचने के लिए अन्य कई संयोग आवश्यक हैं। और देखिए वह सहज संयोग !

एक दिन प्रातः काल मेरे विद्यार्थी जीवन के मित्र श्री जगज्योति जैन मेरे सामने। कहा कि उन्हें एक छोटा सा नाटक चाहिए जिसमें सब स्त्री पात्र हों।

–क्यों ख़ैरियत तो ! मैंने पूछा।

उन्होंने बताया कि 'लायनैस क्लब, दक्षिण दिल्ली' की महिलाएं एक ऐसा नाटक करना चाहती हैं। ज्यादा से ज्यादा आधे घंटे की अवधि का नाटक। जिसमें मेहनत न पड़े। स्त्रियों को ज्यादा संवाद याद न करने पड़ें। वगैरह वगैरह.....।

वाह ! क्या संयोग था। इलाहाबाद में सन् पचास की बात है। अपने विद्यार्थी जीवन में यही जगज्योति जैन और मैं– वह हमारी पहली गहरी मुलाकात थी। इलाहाबाद ड्रैमेटिक असोसियेशन का रंगमंच। उन दिनों स्त्री पात्रों की भूमिकाएं––अभिनय युवक, लड़के ही किया करते थे। वह गुरूवर डॉ. राजकुमार वर्मा जी का ही एकांकी था। उसमें एक ही स्त्री पात्र और शेष पुरूष पात्र। मैं और जगज्योति–दोनों उस प्रदर्शन से जुड़े हुए थे। जगज्योति ने तब कहा था–'यह क्या तमाशा है ! लड़का लड़की बने। यह बिल्कुल अस्वभाविक है। लड़की का अभिनय लड़की ही करेगी। मैं करता हूं यह प्रबंध।' और सचमुच जगजयोति ने वह प्रबंध किया। पहली बार वहां विश्वविधालय मंच पर युनिवर्सिटी की एक लड़की ही नहीं, एक खुबसूरत लड़की ने लड़कों के साथ अभिनय किया। सच, हम सब नवयुवक जैन की प्रबंध बुद्धि के कायल हो गये।

तो वर्तमान जैन को देखकर मुझे जो पुराना छात्र जगज्योति इनमें दिखा, वही सहज संयोग मुझसे 'कजरी बन' की रचना करा लेने का हेतु बना।

स्वतंत्र भाव से 'कजरी बन' को लिखा। यह लघु नाटक नहीं, संपूर्ण नाटक था। इसका प्रथम नाट्य–पाठ 'लायनेज क्लब' की ओर से अठारह फरवरी सन् अस्सी, दिन के ग्यारह बजे चेम्सफोर्ड क्लब दिल्ली के उद्यान में हुआ। उस पाठ में इलाहाबाद के हमारे परम मित्र श्री केशव चन्द्र वर्मा और श्रीमती सरोजनी वर्मा भी उपस्थित थे।

नाट्य–पाठ के बाद स्त्रियां बहुत उत्साहित हुई। नाटक पर काम शुरू हुआ। इस पर काम होन के दौरान ऐसी अनेक स्थितियां आयीं कि लगा, नाटक को छोड़ देना होगा। पर स्त्रियों की निष्ठा उत्तरोत्तर बढ़ती गयी। उनमें छिपी हुई सर्जनात्मक क्षमता को अनुभव कर मैं उनके प्रति आस्थावान होता गया।

उनके साथ यह नाटक प्रस्तुत कर मेरा अनुभव और व्यापक तथा गहरा हुआ।

श्री जगज्योति जैन का साथ और सहयोग मेरे लिए महत्त्वपूर्ण था। उनके व्यक्तित्व से मुझे अनुभव मिला कि युवा उद्योगपति जगज्योति में रंगमंच और कला के प्रति कितनी गहरी समझ और निष्ठा है।

दिल्ली जैसे महानगर में 'कजरी बन' को प्रस्तुत करना, लायनैस क्लब की स्त्रियों द्वारा– जिन्होनें कभी अपने कॉलेज के दिनों में संभवतः अभिनय किये हों––सचमुच बड़ी चुनौती थी।

इस चुनौती को जगज्योति की पत्नी श्रीमती कमलेश जैन ने सहर्ष स्वीकार किया और लाइनैस क्लब, दिल्ली साउथ की समर्थ सदस्याओं ने उस चुनौती को दिल्ली के मंच पर इतनी सफलताओं के साथ चरितार्थ किया–इससे बड़ा शुभ संयोग और क्या हो सकता है।

––लक्ष्मीनारायण लाल

1 जून' 80, नई दिल्ली

कजरी बन का पहला प्रस्तुतीकरण लायनैस क्लब, दिल्ली साउथ द्वारा दिनांक 24 अप्रैल, 1980 को आइफैक्स रंगभवन में सम्पन्न हुआ।

भूमिका में प्रवेशानुसार

कजरी	...	संतोष वासन
सीता	...	नरेश मलिक
पंडिताइन	...	स्वर्णलता भार्गव
सहुआइन	...	वीना वाधवा
गौरी	...	उर्मिला मल्होत्रा
मंगली	...	प्रमिला सूद
चौधराइन	...	कमलेश जैन
नेताइन	...	आशा गम्भीर
ठकुराइन	...	बुलबुल तनेजा
भिखारिनें	...	कुमुद जैन और बेला अरोड़ा
श्यामा	...	नन्दिता जैन
अफसर	...	कंवल अरोड़ा
छात्रा	...	अमरजीत सहाय
मौसी	...	साबरा अंजुम
नृत्य	...	प्राची गंभीर

निर्देशक : लक्ष्मीनारायण लाल
संयोजक एवं सह–निर्देशक : जगजयोति जैन

चरित्र

□

कजरी
सीता, श्यामा
नेताइन
सहुआइन, चौधराइन, ठकुराइन
पंडिताइन गौरी चंदी
मंगली
फूला
महिला अफसर
दो भिखारिनें तथा कुछ स्त्रियां
एक शोध छात्रा और मौसी

पहला अंक

□

पहला दृश्य

(कजरी का दरवाजा। कजरी बैठी हाथ से कपड़े सिल रही है। बेटी नृत्य–अभ्यास कर रही है।)

कजरी : बेटी, बेटी, सीता बेटी।

सीता : हां माई।

कजरी : घुंघरू उतार दे। बर्तन लेकर तालाब चल। मैं अभी आयी।

सीता : अच्छा माई।

कजरी : सुन बेटी, औरतों के मुंह ना लगना। जितने मुंह उतनी बातें। उन्हें बकने देना। वे यहां तक कह सकती हैं कि...पता नहीं कितनी बातें पता है इन औरतों को।

(सीता अन्दर जाती है। टोकरी में बर्तन लिये जाने लगती है।)

कजरी : रूक ! कुछ खा ले बेटी !

सीता : लौटकर खा लूंगी।

कजरी : लौटकर ? नहीं। (भीतर जाकर लाती है) ले मीठी पूड़ी, खाती चली जा।

(सीता जाती है।)

कजरी : (अपने–आप) वो यही कहकर खेत जोतने गये थे––अभी लौट आता हूं फिर खाना खाऊंगा।...वहीं से चुपचाप परदेस चल गये। जानते थे, मुझसे बताते तो मैं जाने नहीं देती। आह, मैं ना लड़ी मोर पियवा चले गये। (गा पड़ती है।)

(बैठकर कैंची से कपड़ा काटने लगती है। पंडिताइन आती है।)

कजरी : पायं लागूं पंडिताइन।

पंडिताइन : सदा सुहागिन रह। कपड़ा अभी तैयार नहीं हुआ ?

कजरी : सांझ तक हो जायेगा।

पंडिताइनः है रे, तेरा दरवज्जा कितना साफ–सुथरा रहता है रे ! पता नहीं तू कब उठती है, कब झारू–बोहारी करती है। कब इतना काम करती है। अरे बलदाऊ की कोई चीठी–पत्री आयी रे ?

कजरी : बैठो पंडिताइन !

पंडिताइन : तेरे लिए प्रसाद लायी हूं रे। पंडित अजोध्या धाम गये थे।

(आंचल फैलाकर लेती है।)

पंडिताइन : प्रसाद खा लेना।

कजरी : नहा–धोकर खांऊगी।

(रख देती है।)

पंडिताइन : सीता कहां है ?

कजरी : तालाब पै गयी है बर्तन धोने।

पंडिताइन : मेरी बेटी श्यामा कहती है–– माई रे, मैं भी 'डांस' सीखूंगी। नाच को ही 'डांस' कहते हैं न ?

कजरी : हां हां।

पंडिताइन : पंडित कहते हैं, गांव में डांस–फांस नहीं सीखना–करना है। अच्छे घर का काम नाहीं है। अरे कौन बहस करे उनसे।

कजरी : आखिर अब स्कूल में तो जाती हैं गांव की लड़कियां। वहां टीचर गाना–नाचना सिखाती हैं या नहीं ?

पंडिताइन : कहते हैं स्कूल की बात और हैं उनके मुंह कौन लगे !

कजरी : आखिर स्कूल में सीता ही तो लड़कियों को नाच सिखाती है। टीचर तो बैठी सुइटर बुनती हैं।

पंडिताइन : अपनी आंखिन से देख है, हां। जैसी नाच सीता करे, स्कूल की टीचर को भी ना आवै।...अच्छा अब चलूंगी। (जाते–जाते लौटकर) अरे वही जमाना थोड़े ही रह गया कि नाच–गाना रंडी–पतुरिया का काम था। जमाना बदल गया, एक से एक बड़े घर की लड़किया नाचती–गाती हैं, हां। (जाकर फिर लौटती है।) पंडित जी को कहने दो। उन्हें क्या मालूम। श्यामा अपनी सखी–सहेली सीता से साथ नाच सीखेगी। हां, नहीं तो...!

(जाती हुई फिर लौटकर) गूदर चमार की लड़की सुगनी को विकास दफ्तर में आखिर नौकरी कैसे मिल गयी ? गाती थी। गला अच्छा था। अब तो रेडियो में गाने लगी। बैठे रहें ब्राह्मण–ठाकुर मोंह फुलाए... बात कही साफ। मैं ज्यादा बात नहीं करती, हां। (जाने लगती है। सहुआइन आती है। उसे देखकर पंडिताइन फिर लौटकर आती हैं।)

पंडिताइन : अरे सहुआइन, पहले तो मुझे देखते ही कहती थी––पायं लागूं पडिंताइन, अब क्या हो गया ? बहुत धन आ गया ? धन का सांप छू गया ?

सहुआइन : जबान सम्हाल कै बोलो पंडिताइन, हां नहीं तो।

पंडिताइन : तो बोल, क्या कर लेगी। मुझे कजरी समझ रखा है। कि आंख दिखाएगी ?

सहुआइन : अच्छा पायं लागी। अब तो जाओ।

पंडिताइन : फिर तो नहीं जाती !

(बैठ जाती है।)

अब, बोल क्या कहने आयी है कजरी से ? बोल ना !

सहुआइन : अपना सूद–ब्याज मांगने आयी हूं।

पंडिताइन : उसे अपना काम पूरा करने दे। मुझे बता, कितने मूलधन पर कितना हुआ सूद–ब्याज ?

सहुआइन : अगहन में पूरे तीन सौ रूपये दिये थे। अगहन, अगहन एक साल...पूस, माघ, फागुन, चैत चार महिना।

पंडिताइन : (उंगली पर हिसाब) हां तो ! कितना हुआ ब्याज ?

सहुआइन : पूरे सौ और पच्चीस, सवा सौ।

पंडिताइन : तीन सौ पर सवा सौ ब्याज। सुनो सहुआइन। कजरी को जो गांव गढ़ी में बदनाम करती फिरती हो, उसका सूद–ब्याज कितना हुआ ?

सहुआइन : जबान संभालि कै बोलो हां, बड़ी आयी हैं रे ते करने ! अरे हमने क्या बदनाम किया ?

पंडिताइन : आ हा हा हा ! फिर इसी सत्तीचौरा गांव में पुलिस कैसे आयी ? उस मुसाफिर के कतल मे इसी कजरी का नाम कैसे जुड़ा ?

सहुआइन : पता नहीं। मुझे का मालुम !

पंडिताइन : हां, मुझे का मालुम ! पुलिस न आई होती तो कजरी को तीन सौ रूपये कर्ज क्यों लेने पड़ते ? फिर इतना सूद–ब्याज कैसे बढ़ता ! फिर आंख मटकाती हुई तगादा करने क्यों आती ?

कजरी : लो, एक कपड़ा तैयार हो गया ।

(कपड़ा लेकर पंडिताइन चलने लगती है।)

पंडिताइन : हअं। बड़ी आयीं सहुआइन.....।

सहुआइन : बड़ी आयीं !

(पंडिताइन जाती है।)

सहुआइन : जो कर्ज लेगा वह भरेगा––बात कही समय !

कजरी : गांव छोड़कर भांगूगी नहीं।

सहुआइन : जिसका मर्द भाग गया उसका कौन ठिकाना !

कजरी : (चुप है।)

सहुआइन : हमें तो अपना सूद–ब्याज चाहिए ! अरे बोलती क्यों नहीं...?

कजरी : तुम्हीं जी भरकर बोल लो ! शांती हो जाय !

सहुआइन : तु बोलती नहीं, चाकू चलाती है।

कजरी : मुंह थक जाय तो चुप हो जाना !

सहुआइन : आना आज घाट पर, पता चलेगा।

कजरी : अब और क्या पता चलेगा !

(चली जाती है।)

दूसरा दृश्य

(तालाब का घाट। ऊपर कुछ स्त्रियां कपड़े धो रही हैं। नीचे कुछ स्त्रियां बर्तन साफ कर रही हैं। कजरी आती है।)

मंगली : देखती नहीं, इधर छींटे आ रहे हैं।

गौरी : तो हम का करें ! उधर हट जाओ !

सीता : उधर कहां जाएं ?

कजरी : तुम लोग बोलती हो, हम चांव–चांव करते हैं।

सीता : जान–बूझकर अपने गंदे–मैले कपड़ो के छींटे हमारे बर्तनों पर डालती हैं।

गौरी : बड़ी आयी बर्तन वाली। गांव के बन में मुसाफिर को मारकर फेंक दिया, समझती है कि....

सीता : देख माई, ये इसी तरह की बातें करती हैं। कपड़ा धाने नहीं, लड़ने आती हैं।

(कजरी चुपचाप बर्तन साफ करने लग जाती है।)

गौरी : पुलिस को घूस देकर, समझती है बच जायेगी। जैसे इस गांव के रंडुओं को उल्लू बनाती है, समझती है पुलिस की आंखों में भी धूल फेंक देगी।

सीता : तुम्हारा दिया खाते है, तुम्हारी जमीन में बसे हैं। माई को ऐसा–वैसा कहा तो मैं नहीं सहूंगी।

कजरी : अरे बेटी, मुंह थक जायेगा, अपने–आप चुप हो जायेंगी।

चंदी : सुन लो कान खोलकर हां, इस गांव के मर्द लोग चुप हो गये, स्त्रियां नहीं चुप रहेंगी। उनका क्या जाता है।

गौरी : इसी कलमुंही के नाते यह गांव बदनाम हुआ।

सीता : कलमुही तुम, तुम्हारे बाप–दादे, तुम्हारे सात पुस्त !

गौरी : अच्छा, देखूंगी !

कजरी : अब तक क्या नहीं देखा है ?

सीता : जितना बचो इनसे, सिर चढ़ी जाती हैं।

चंदी : चुप रह कल की लौंडी !

सीता : जबान खींच लूंगी हां !

चंदी : आ, आ हिम्मत हो !

(नेताइन, सहुआइन, चौधराइन और ठकुराइन आती हैं।)

गौरी : आवो देखो, माई बेटी हमसे लड़ रही हैं।

मंगली : क्यों झूठ बोलती हो, मुंह में कीड़े पड़ेंगे।

नेताइन : क्या कहा ? तेरी यह हिम्मत। ब्राह्मण ठाकुर के यहां की स्त्रियां झूठ बोलेंगी ?

कजरी : नहीं, हमी बोलते हैं झूठ। तुम लोग तो दूध की धुली हो।

चौधराइन : चुप रह, जबान लड़ाती है हमसे !

ठकुराइन : आदमियों की पंचायत में तेरा जादू चल गया। अब हमारी पंचायत में तुझे हाजिर होना होगा, क्यों चौधराइन।

चौधराइन : हां ठकुराइन, तब देखेंगे इसका दीदा, क्यों ठीक है न नेताइन ?

नेताइन : ठीक कहती हो चौधराइन। क्यों सहुआइन !

सहुआइन : बिल्कुल सही कहती हो नेताइन।

सीता : (सहसा) वाह रे नेताइन। वाह रे चौधराइन। वाह रे ठकुराइन ! छम्मक छम्मा, छम्मक छम्मा।

कजीर : चल बेटी घर चल।

सीता : बड़ी आयी हैं ठकुराइन, चौधराइन, नेताइन।

फूला : जितना ही हम दबते रहेंगे, ये हमें दबाती रहेंगी।

चौधराइन : ऐसी ही दबाई जाओगी, जैसे घास दबाई जाती है।

कजरी : घास कभी नहीं दबती !

ठकुराइन : दबती नहीं तो जड़ से काट दी जाती है।

सीता : जड़ मिट्टी में है !

गौरी : इसकी जबान बहुत चलने लगी है।

चौधराइन : बेटी किसकी है।

सीता : (सहसा) माई। बिच्छू है बिच्छू।

मंगली : मार दे।

सीता : क्यों मारूं। बिच्छू तो सगुन है–पच्छिम दिसा से पूरब दिसा को आ रहा था। मेरा बप्पा आयेगा !

(बिच्छू को उठाकर डराती है उन स्त्रियों को।)

सीता : चल, तुझे दूध भात खिलाऊंगी अपना नाच दिखाऊंगी !

ठकुराइन : तु भागती है या नहीं यहां से।

सीता : नहीं भागती, किसी के बाप का डर है !

कजरी : नहीं, घर जा !

चौधराइन : अभी इसी वक्त।

ठकुराइन : क्यों ठीक है न नेताइन ?

नेताइन : क्यों री कजरी, सुन तो जरा।

(गुप्त वार्तालाप)

कजरी : नहीं, नहीं, मैं तुम्हें भी घूस दूं यह नहीं हो सकता। अपनी जान के लिए आदमियों से डरती रही। अब स्त्री से भी डरूं––इससे बहतर है मर जाना। लड़ते–लड़ते मर जाना। मेरा पति परदेस चला गया। तुम समझती हो मैं अकेली हो गयी ? मेरा पति परदेश भाग कर नहीं गया। तुम्हारे मर्दों से डरकर चला गया। अब मैं तुमसे डरूं ? नहीं...। आवो कर लो पंचायत। तुम सब ने फैसला कर लिया है, अब फैसला क्या करोगी। देखो यह पेड़, वह मेरे पति का लगाया हुआ है। घाट पर स्त्रियों को छाया मिले।...स्त्रियों को छाया !

(इसी बीच स्त्रियों की पंचायत बैठ चुकी है। वे ऊपर बैठी हैं, ये तीनों खड़ी है।)

चौधराइन : हां तो वह मुसाफिर तुम्हारे घर आया था !

कजरी : कौन मुसाफिर ?

ठकुराइन : वही जिसकी लाश हमारे गांव के बन में पड़ी मिली।

सीता : जाकर पूछो पुलिस थानेदार से। बड़ी चली हैं गड़ा मुर्दा खोदने ! कोई काम न काज, बड़ी आयी हैं पंचायत करने ! सौ चूहे खाइके बिलार भई भक्तिन...।

कजरी : घर जा बेटी। जा, तुझे स्कूल जाना है। जा, अकेली नहीं हूं मैं !

(सीता बर्तन उठाकर चली जाती है।)

कजरी : मेरे भगवान पत्थर के नहीं हैं। इसके भगवान हैं पत्थर के। लो मारो पत्थर ! चलाओ !

चौधराइन : तूने उस मुसाफिर को नहीं मारा, इसका क्या सबूत है तेरे पास ?

कजरी : मैने उस मुसाफिर को मारा, इसका सबूत तुम लोगों के पास क्या है ?

ठकुराइन : हमारा विश्वास।

सहुआइन : हमारी बात गलत नहीं होती।

चौधराइन : हमारे चौधरी जी भी कहते थे।

गौरी : हमारे देवर जी कह रह थे।

(दोनों स्त्रियां पस्पर बातें करने लगती हैं।)

मंगली : ये भी कुछ कह रही हैं।

(दोनो स्त्रियां लड़ने को तैयार हो जाती है।)

कजरी : सुनो...सुनो...शांती से बैठ जाओ गौरी और चंदी बहन।

गौरी : खबरदार अगर मुझे बहन कहा।

कजरी : अच्छा ! माता जी

चंदी : चुप रह मुहं झौंसी। अभी तो मेरी शादी हुई है।

कजरी : जो भी हो तुम लोग, सबूत चाहती हो न ? सबूत तुम्हारे मरदों के दिलों में है।

(हाय ! कहकर सब अपने मुंह–कानों पर हाथ रख लेती है।)

सहुआइन : जैसी है, वैसी सबको समझती है।

कजरी : जो जैसा है, सबको वैसा समझता है।

ठकुराइन : हमारे मर्द ऐसे–वैसे नहीं है।

चौधराइन : गांव में जो रंडुए हैं वो होंगे तेरे दिवाने।

कजरी : फिर तुम लोग क्यों डरती हो मुझसे ? क्यों मुझसे इतना जलती हो ? क्या दुश्मनी है मुझसे ? क्यों ?

(वे स्त्रियां आपस में)

सहुआइन : झूठ क्यों बोलूं। मुझे तो अपने साहूजी पर शक है।

चौधराइन : शक तो मुझे भी अपने मरद पर है।
नेताइन : मेरे पास तो नेताई जी की बेइमानी का सबूत है––पर हम कबूल क्यों करें।
चौधराइन : हां जो अपने घर की बात है।
गौरी : अरे अपने–आप पर विश्वास हो तो मरद पर शक करने की कोई बात ही नहीं।
मंगली : जे कही ठीक बात !
ठकुराइन : मेरे ठाकुर हैं। मैं जिधर पांव रखूं वहां–वहां वह सूंघते चलते हैं।
चौधराइन : अरे कुत्ते हैं क्या ?
ठकुराइन : क्या कहा ?
नेताइन : कहा कि वाह वाह ठकुराइन !
ठकुराइन : इसमें साबासी की क्या बात। अपनी–अपनी तंदुरूस्ती है। गुन ढंग है।
गौरी : ठीक बात।
(कजरी जाने लगती है।)
चौधराइन : अरे अभी पंचायत कहां खतम हुई ?
(स्त्रियां पास आ जाती हैं।)
नेताइन : तो पंच फैसला है कि उस कतल की पुलिस तहकीकात फिर से हो। मरदों का नहीं सिर्फ हम औरतों का बयान और गवाही ली जाय।
चौधराइन : मर्द पुलिस नहीं, महिला पुलिस बुलायी जाय।
सहुआइन : मर्दों पर यह जादू मार देती है।
चौधराइन : आंख मार देती है।
सहुआइन : इशारे कर देती है।
नेताइन : इसकी हिम्मत तो देखो।
ठकुराइन : इसे न कोई लाज है, न शर्म।
कजरी : हे भगवान, इन्हें कितना पता है मेरे बारे में ! कुछ इन्हें अपने बारे में भी पता होता।
(स्त्रियां जा रही हैं।)
कजरी : हाय ! कैसी–कैसी बातें करके अपने घर जा रही हो। वे घर–आंगन कितने सूने होंगे। परदेसी जब मुझे अपने इस गांव में ले आया था, तब मैं तुम्हारी बातें नहीं समझ पाती थी। अब सब बातें समझ में आती हैं।

तीसरा दृश्य

(कजरी का दरवाजा। दिन का तीसरा पहर। कजरी कपड़ा काट रही है। सीता श्यामा को नृत्य सिखा रहीं है।)

कजरी : बेटी, ले सिलाई कर ! अरे बेटी, यह क्या शकल बना रखी है।

(श्यामा को बैठाकर उसके बालों में कंघी करना शुरू करती है। केश संवारती है। दो भिखारिनें गाती हुई आती है:)

कजरी के बन में बैठी नगनियां
भौंरा ! अरे रस भौंरा
पतली कमर लंबे केस
डसै नागनियां वहि देश
बेदरदी ! कजरी के बन मति जा।
सात कुआं नौ बावली
ओरी ! ओ रस भंवरी
सौलह सै पनिहार
गयी इस कजरी हमारे मन भा।
प्रीति तो करिए दो जाना
भौंरा ! अरे रस भौंरा
जेस फुलवा मनिहार
बेदरदी ! कजरी के बन मति जा।
प्रीति तो करिए दो जाना
भौंरा अरे रस भौंरा
जेस माली रंगरेज
बेदरदी ! कजरी के बन मति जा।
एक रंग लादे चूनर लाल रे
भौंरा, अरे रस भौंरा
मोको अकेली लागै लाज
बेदरदी ! कजरी के बन मति जा।
सब कुछ छोडू रे मना
प्रीती ने छोड़ी जाय
बस गयी कजरी हमारे मन मां...।

(कजरी उठती है। आंचल में भिक्षा लाकर उन्हें देती है। भिखारिनें चली जाती हैं।)

सीता : क्या देख रही है ?

कजरी : (मुस्कराकर रह जाती है।)

श्यामा : वह क्या गीत था काकी ? कजरी के बन में बैठी नगनियां...।

कजरी : माई ! क्या करेगी ?

श्यामा : भौंरा, अरे रस भौंरा।... क्या मतलब ?

कजरी : अरे हर चीज का मतलब होता है रे ?

सीता : हां, होता है।

श्यामा : क्या है काकी ?

कजरी : भौंरा ! अरे रस भौंरा ! बेदरदी, कजरी के बन मत जा। (अजीब ढंग से हंस पड़ती है।)

श्यामा : ऐसे हंसोगी काकी, तो हम रोने लगेंगे।

कजरी : रोओगी तो कभी नहीं बोलूंगी हां।

सीता : कजरी बन, बंबई–कलकत्ता परदेस है जहां मेरे बप्पा गये हैं।...उनके बिना यह गांव भी वही कजरी का बन है। कजरी के बन में बैठी नगिनियां...।

सीता : सहुआइन...ठकुराइन...चौधराइन...।

चौथा दृश्य

(स्थान, वही तालाब का दृश्य। स्त्रियां आ रही हैं––कोई नहाने, कोई कपड़ा धोने, कोई केवल गप्प मारने।)

गौरी : अरे आज घाट सूना है।

मंगली : अरे गूदर चमार चल बसा।

चौधराइन : अच्छा, ओह तभी तो सूना है।

ठकुराइन : गूदर की बेटी सुगनी कमा रही है, गुजर–बसर हो जायेगी। जो भी हो कजरी सही कहती है। औरत को आज चार अक्षर जरूर पढ़–लिख लेना चाहिए। कुछ गुन ढंग जरूरी है।

नेताइन : मेरे नेताई खुद कमाते हैं, खुद फूंकते हैं। कानी कौड़ी कभी मेरे हाथ नहीं रखते।

गौरी : अरे नेताइन, मेरा एक उपाय मानो–चुपचाप जेब से निकाल लिया करो।

मंगली : यह तो चोरी है। कमाई तो अपनी ही कमाई है।

चौधराइन : अरे कजरी को देखो न। नाच जानती है। नाच सिखाती है। कपड़े सिलती है। पतंग बनाकर बेचती है। ऊपर से अपने–आप को ऐसा चमका कर रखती है कि गांव के रंडूए सीटी बजाते हैं।

नेताइन : काई चोली खरीदकर देता है।

गौरी : साबुन, तेल, इतर, कंघी–सीसा।

ठकुराइन : अरे देखो, वह आ रही हैं, लूपवती देवी।

(हंसी)

चौधराइन : हाय निरोध नाम है उसका या विरोध। दहिजरा याद नहीं पड़ता। आवो बहिन जी, नमस्ते।

(फैमिजी प्लानिंग महिला अफसर का आना)

अफसर : लपवती रहो बहनो !

ठकुराइन : बहन जी आपको लाज–शरम नहीं।

नेताइन : बहुत पढ़ी–लिखी हैं।

चौधराइन : अच्छा !

अफसर : काम ही ऐसा है। अरे गौरी, मैं तो तुम्हारे लिए ही आज आयीं हूं।

गौरी : तो हमसे बोलो न !

(अफसर गौरी के कान में कहती है।)

गौरी : ना बाबा ना, यह नहीं होगा।

नेताइन : क्या बात है रे ?

(सबको इशारे से बताती है। सब देखने लगती हैं।)

गौरी : ना, यह हर्गिज नहीं, मेरे मरद का आपरेशन नहीं होगा। नहीं तो ये भी बिगड़ जायेंगे, हां।

(नेताइन स्त्रियों से गुप्त मंत्रणा करती है।)

नेताइन : हां अफसर बहिन जी, एक काम हमारा कर दो तो हम गौरी के मरद का 'आपरेशन' करा देंगे।

अफसर : बताओ क्या काम है ?

चौधराइन : बात ई है बहिन जी, आपसे तो कुछ छिपा नहीं है।

मंगली : आपका काम ही ऐसा है।

चौधराइन : चुप रह। आप तो कजरी को खूब जानती हैं, जानती हैं न।

गौरी : और हमें भी जानती हैं।

चौधराइन : खामखा बीच में टांग मत अड़ाया कर, हां। उस कतल के मामले को सबने दबा दिया––इस गांव के रंडुए, मरद लोग और पुलिस। काई सबूत ही नहीं मिल पाया दाढ़ीजार के पूतों को, हां। हमने बहुत कोशिश की कि महिला पुलिस अफसर आकर इस कतल के मामले की फिर से जांच–पड़ताल करे।

ठकुराइन : लेकिन रंडुओं के गांव आने में महिला पुलिस भी आनाकानी करती है !

ठकुराइन : तो ऐसा है बहिन जी, आप ही महिला पुलिस अफसर बना जाओ। हम आपका एहसान मानेंगे !

अफसर : क्या ?

चौधराइन : आपकी कुछ सेवा भी कर देंगे।

अफसर : कमाल करती हो तुम लोग !

ठकुराइन : अरे महिला तो हो ही । अफसर भी हो। बस पुलिस बन जाओ। क्यों..ठीक है न !

नेताइन : हमारा काम आप कर दो। आपका काम हम कर देंगे।

अफसर : पक्की बात ?

चौधराइन : अजी हम कच्ची बात नहीं करते। इसके मरद ने आपरेशन नहीं कराया तो मैं अपने मरद का करा दूंगी।

अफसर : अच्छा तो ठीक है। मगर किसी को कानों कान खबर न होने पाये, नहीं तो मेरी नौकरी सफाचट्ट।

ठाकुराइन : हाय, ऐसा कभी हो सकता है भला।

गौरी : किसी को खबर नहीं होगी।

अफसर : मगर महिला पुलिस की वर्दी।

चौधराइन : अफसरी बहन, उसका इंतजाम आप कीजिए। लीजिए ये पचास रूपया।

अफसर : कल इसी समय आऊंगी।

नेताइन : अरे सुनो तो....

(दोनो जाती हैं।)

ठकुराइन : अब बन गया काम।

चौधराइन : सैयां भये कोतवाल अब डर काहे को ! कतल का सबूत अब मिलेगा। बड़ी सीना खोलकर चलती है। अब पता चलेगा, हां !

ठकुराइन : पता नहीं अफसरी कल आती है या नहीं।

गौरी : लाख बार गरज होगी तो आयेगी।

(स्त्रियां कपड़े धोने, बर्तन माजने लगती है।)

चौधराइन : पचास रूपया सब की तरफ से दिए हैं। तेरह–तेरह रूपये सबको देना है, हां। मैं अकेली खर्चा क्यों करूं।

ठकुराइन : पचास ज्यादा दे दिये। दस रूपये काफी थे।

चौधराइन : अरे कतल का केस बनाना है। खबरदार पंडिताइन आइ रही हैं...राम–राम पंडिताइन !...पंडिताइन, तुम भी खूब चमकती हो। बहुत पाउडर लगाती हो ? हाँ, कोई बुरी बात थोड़े ही है।

पंडिताइन : क्यों जलती हो चौधराइन ! अरे चमकना ही तो निसानी है !

ठकुकराइन : चार ही दिन की जवानी है।

चौधराइन : तुम्हारी कजरी के क्या हाल हैं ! मेरे चौधरी से कल बात करने के चक्कर में थी, मुझे बड़ा गुस्सा आया, मेरे चौधरी भी कम नहीं हैं।

ठकुराइन : इन मर्दुओं की बात न पूछो !

चौधराइन : सारा कसूर उसी कजरी का थोड़े ही है !

गौरी : पंडिताइन और कजरी में खूब बनती है !

ठकुराइन : दोनों बड़ी सुन्दर हैं न !

चौधराइन : पंडिताइन को कोई कुछ कहेगा तो मुझसे बुरा कोई न होगा।

पंडिताइन : रहने दो। मैं तुम सब को खूब जानती हूं।...मैं कजरी नही हूं हां जो तुम खामखा उसके पीछे हाथ धोकर पड़ी रहती हो। ––एक बात सुन लो हां, कजरी कोई साग–मूली नहीं है !

चौधराइन : अरे छोड़ो भी कोई और बात करो पंडिताइन !

(नेताइन आती है।)

पंडिताइन : इस मुए गांव में अलावा तुम लोग कोई और बात करती हो ? पूछो अपने–आप से।

ठकुराइन : तुम पूछो, हाँ।

(सब हंसती हैं।)

चौधराइन : अच्छा पंडिताइन, आज एक गाना होइ जाय !

पंडिताइन : चलो शुक्र है भगवान का, गाने की याद तो आयी।

चौधराइन : गाओ न बड़ी ठैंस मारती हो !

गौरी : पानी डाल दूंगी हां !

(पंडिताइन गाती हैं, फिर सारी स्त्रियां गा पड़ती हैं।)

आँगन बीच कुआं राजा डूब के मरूंगी
तू मत डरना औरों को डराऊंगी
ससुरा लड़ेगा तो मैं भी लडूगी

आजा री सास तुम्हें ओखली
कुटाऊँगी....

मध्यान्तर

दूसरा अंक

पहला दृश्य

(कजरी का दरवाजा। अकेली बैठी पतंग बना रही है। नेताइन आती है।)

कजरी : राम राम नेताइन !

नेताइन : राम राम।

कजरी : बैठो।

नेताइन : बैठने नहीं, एक बात कहने आयी हूं।

कजरी : कहो।

नेताइन : गूदर चमार मर गया न।

कजरी : हां नेताइन दीदी, गरीब मरते हैं अमीर का स्वर्गवास होता है।

नेताइन : अरे उस बात को छोड़ ! मैं एक बात कहने आई हूं। वह बात मेरे नेताजी ने सुझायी है।

कजरी : बोलो न भला।

नेताइन : अपने तक ही रखना। बात ये है न। यों तो सभी मरते हैं। पर गूदर चमार का मरना सिर्फ मरना ही नहीं होना चाहिए।

कजरी : हाय, क्या मतलब ?

नेताइन : बुरा मत मानना। एक बात कहूं ?

कजरी : कहो न !

नेताइन : कोई सुन तो नहीं रहा। (देखती हैं) बात यह है तेरे भी हाथ तंग हैं। और मेरे भी। सहुआइन का भी कर्ज है तेरे ऊपर। तो ऐसा सोचा है कि गूदर की मौत को कतल साबित कर दें––ठाकुरों ने मारा है गूदर को !

कजरी : क्यों ?

नेताइन : ठाकुरों का दिमाग ठीक हो जाएगा और गूदर की मौत के मुआविजे में दो हजार मिल जायेंगे।

कजरी : चुप रहो। राम राम राम।

(सीता स्कूल से आती है।)

कजरी : जा चूल्हे पर खाना रक्खा है।

(जाती है।)

कजरी : यह मुझसे नहीं होगा ! हे भगवान !

नेताइन : इसमें क्या राम भगवान !

कजरी : क्यों कहा जाता है चारों तरफ सब में भगवान है ?

नेताइन : तेरा सिर घूम गया है ! अपने–आप को क्या समझती है, खबरदार किसी से कहना नहीं उल्टे ठाकुरों से कह दूंगी, हां ? तू अपने–आप को समझती क्या है। महिला पुलिस अफसर आने वाली है। सोच ले। अब भी वक्त है।...वो देखो पुलिस आ गयी।

(महिला पुलिस अफसर के साथ स्त्रियां। सीता भीतर से आती है।)

नेताइन : यही है साहब। सारा गांव तबाह किये हुए है।

अफसर : नाम ?

कजरी : कजरी।

अफसर : पिता का नाम ?

कजरी : गोर्वधन।

अफसर : जात ?...कौम ?

कजरी : औरत।

अफसर : किस जाति की है ?

कजरी : जो मेरा पति है–बलदाऊ।

अफसर : बलदाऊ किस जाति का है ?

कजरी : इन्हें पता होगा।

ठकुराइन : बलदाऊ का बाप अहीर था। मां हरिजन थी।

कजरी : मेरा बाप धोबी था। मां जुलाहे की बेटी थी। वे अपने गांव के बाहर बाग में रहते थे।

(अफसर का अलग से)

चौधराइन : खबरदार बहन जी, यह फजूल की बातों में फसा लेती है। वही सीता है। खबरदार रहना !

अफसर : मुझे बहिन जी कहोगी तो इन्हे शक पड़ जायेगा।

चौधराइन : अच्छा नहीं बहिन जी।

अफसर : फिर वही बात ।

चौधराइन : बहिन जी, ऐसी गलती नहीं करूंगी अब। इसे हड़का दीजिए बहिन जी।

अफसर : ओहो ! तुम्हें कोई समझ–बूझ नहीं ।

चौधराइन : यह बात तुम लोगों को कही जा रही है। नमस्ते करो साहब को।

मंगली : नमस्ते बहिन जी।

सीता : नमस्ते। हम तुम्हें कुछ नहीं समझते !

कजरी : तू अन्दर जा। कितनी आंखें घूर रही है।

चौधराइन: ठीक से खड़ी रहो ! पुलिस अफसर हैं। जेल भेज देंगे !

सीता : बड़ी आयी महिला पुलिस अफसर लेकर।

चौधराइन: ज्यादा बोलेगी तो...जा उधर !

सीता : वाह, मेरी माई को अकेली समझ रखा है !

कजरी : अकेली अवाज है, पर कच्ची नहीं है। न जाने कितने–कितने धागों से बनी है यह डोर...हां साहब, पूछो, क्या पूछना है।

अफसर : (चौधराइन से) ये मुझे पहचान तो नहीं गयी। जा रहीं हूं।

(जाने लगती है। स्त्रियां घेर लेती हैं।)

सहुआइन: अरे कड़क बोलिए। ये पचास रूपये और लिजिए। गुस्से में डांटिए। सब डर जायेंगी।

सीता : सब देख रही हूं।

अफसर : सावधान ! कोई अपनी जगह से हिले डुले नहीं, वरना गोली मार दी जायेगी।

सीता : वाह !

कजरी : यहां डराने–धमकाने की कोशिश मत कीजिए।

अफसर : बड़ी निडर है। मां बम्ब है, बेटी बारूद है।

सीता : आप चिनगारी हैं।

चौधराइन : बेहया हैं बेहया।

कजरी : साहेब, जरा इनकी बोली तो देखो !

सहुआइन : इसकी हिम्मत तो देखो।

कजरी : हां वही तो है मेरे पास।

(पंडिताइन आती है।)

अफसर : वह परदेसी जिसकी लाश गांव के जंगल में पायी गयी, यहां आया था ?

कजरी : हां आया था ?

अफसर : वह सिर्फ तुम्हारे ही दरवाज पर क्यों आया ?

कजरी : शायद मैं अकेली औरत थी इस गांव में, जिसके आगे–पीछे और कोई नहीं था।

चौधराइन : सही बात क्यों नहीं कहती ? यह बदनाम औरत है साहिब !

कजरी : इसके अलावा इनके पास कहने को और कुछ नहीं है।

सहुआइन : इसकी बातों में मत आना साहेब। यह बड़ा जादू–टोना करती है। आंख मारकर फंसा लेती।)

कजरी : सहुआइन की कसम।

सहुआइन : चुप रह। मुझे नहीं जानती हां !

ठकुराइन : अरे चौधराइन इसे पता तो नहीं चल गया है।

चौधराइन : बहिन जी, नहीं हुजूर, जरा इधर तो आ जाइए।

(अलग बात)

सीता : माई, देख उधर !

पंडिताइन : माई सब देख रही है। फिकिर न करना। जिधर सच्चाई है उधर है भगवान।

मंगली : हाय दइया कैसी अफसर है, खुसुर–फुसुर कर रही है !

सीता : फोटो ले लो इन सबका, अखबार में छाप दो !
चौधराइन : जो पूछा जाय, उतना ही बोलो। और बोली तो खैरियत नहीं !
सीता : बड़ी अच्छी लग रही हो चौधराइन !
चौधराइन : चुप रह !
कजरी : हां, साहेब सल्लाह कर लिया, अब पूछो।
मंगली : इन्हें तो हम जानती हैं, ई क्या पूछेंगी ?
नेताइन : चुप रह !
अफसर : हाँ तो कजरी।
सीता : श्रीमती कजरी देवी...जबान सम्हाल कर बोला !
अफसर : हाँ, श्रीमती कजरी देवी, कसम खाओ––जो कहोगी सच–सच कहोगी।
कजरी : ठकुराइन की कसम जो कहूंगी सच कहूंगी !
ठकुराइन : दूर हट। अपनी कसम खा !
कजरी : नेताइन की कसम।
नेताइन : मुझे ज्यादा गुस्सा मत दिल, हां !
कजरी : शोर करोगी तो मर्द लोग आ जायेंगे।
अफसर : इस गांव के मर्द इसकी तरफ क्यों हैं ?
चौधराइन : मर्द नहीं रंडुए।
अफसर : रंडुए माने ?
गौरी : इसी की वजह से जिनकी शादी नहीं हुई–वही रह गये रंडुए। देखो देखो, साहेब को इशारे कर रही है।
चौधराइन : असली बात पर आ जाओ साहेब ! (धीरे से) ओ बहिन जी सावधान ! उसकी तरफ मत देखा !
ठकुराइन : असली बात पर आइ जाव–उस मुसाफिर की हत्या इसी ने की !
अफसर : मगर पुलिस की तहकीकात है, डाक्ट्री रिपोर्ट है कि वह परदेसी किसी ऊंचाई से नीचे गिरकर मरा।
नेताइन : यह सरासर झूठ है। आप नयी रिपोर्ट बनाइए... फिर से बनाइए, आगे नेताजी सम्हाल लेंगे।
अफसर : उसकी लाश कहां है ?
चौधराइन : आप लिखिये तो...हमारे मर्द देख लेंगे !
अफसर : तुम लोग क्या बात करती हो !
चौधराइन : सीधे से लिखो, नहीं तो भंडाफोड़ कर दूंगी।
अफसर : ...अच्छा बोलो क्या लिखना है !
चौधराइन : मुसम्मात कजरी ने, मुसाफिर का, कतल किया।
सीता : चौधराइन चश्मदीद गवाह हैं।
चौधराइन : हां हां, यह भी लिख लो !
पंडिताइन : अरे चौधराइन यह भी लिख लीजीए !
सीता : साहेब, यह भी लिख लीजिए !
अफसर : यह लड़की बीच में क्यों बोलती है !
गौरी : अपने आप को न जाने क्या समझती है।
पंडिताइन : तुम लोग अपेन–आप को क्या समझती हो !
चौधराइन : हाँ तो बयान लिखो, इसने बाँक से मारकर कतल किया।
अफसर : मगर पहले लाश पर किसी घाव का निशान नहीं था।
ठकुराइन : निशान होता नहीं बनाया जाता है।
सहुआइन : दिखाइए आप की रिपोर्ट में घाव है।
नेताइन : आप बिलकुल नये सिरे से केस को बनाइए।
पंडिताइनः बनाइए नहीं अपना सिर पीटिये।
अफसर : मगर पुलिस की रिपोर्ट ?
चौधराइन : पुलिस को इसने घूस दिया।
सहुआइन : हां मैं गवाह हूं इसने घूस दिया। तीन सौ रूपये।
पंडिताइनः अपने मर्द की कसम खावो–वे रूपये तुम्हीं ने उधार दिये या नहीं ?

सहुआइन : अपने मरद की कसम, हमने रूपये उधार नहीं दिये। अरे राम, इसने जादू कर दिये। मैं क्या से क्या बक गयी। हाय राम !

(सिर पीटती हुई चली जाती है।)

ठकुराइन : साहब मेरा बयान लो।

अफसर : ले लिया।

चौधराइन: मेरी गवाही ?

अफसर : हो चुकी।

नेताइन : अरे जा कहाँ रही हो ?

अफसर : सबके बयान हो चुके।

चौधराइन: हाय दइया, कब ?

नेताइन : और गवाही ?

अफसर : उस कतल की गवाह कोई नहीं है।

नेताइन : गवाही से क्या होता है ! हमारा विश्वास है कि इसी ने कतल किया है।

अफसर : सबूत ?

चौधराइन: ये लो सौ रूपये, अब तो सबूत मिल जायेगा।

सीता : हां क्यों नहीं, मिल गया।

अफसर : अच्छा, अब चलते हैं।

चौधराइन: अरे ऐसे कैसे चली जाओगी। कोई मुक्त है क्या।

ठकुराइन : हाँ, नहीं तो।

मंगली : बहिन जी, थक गयी होंगी, कुछ चाय–पानी ले आऊं।

चौधराइन: कितनी बार कहा––बहिन जरी नहीं हैं, साहेब हैं। गोली मार देंगी।

मंगली : बड़ी आयीं गोली मारने। जैसे हम जानते ही नहीं।

ठकुराइन : अरे किधर चलीं ?

अफसर : उसे शक पड़ गया है।

नेताइन : पड़ने तो ! क्या कर लेंगी।

चौधराइन: कागज पूरा होना चहिए !

(सलाह मशविरा)

अफसर : चौधराइन बयान दो। आखिर असली मामला क्या है ?

चौधराइन: मामला है कि...कह दूं ठकुराइन ?

ठकुराइन : हां कहि दो !

चौधराइन: ई है कि...कह दूं ? बता दूं ? खोलकर कह दूं ?

(स्त्रियों का समर्थन)

चौधराइन: इसी की वजह से हमारे मर्द लोग हमारे हाथ से निकले जा रहे हैं। और कह दूं ?...इसी के चलते गांव बदनाम है। इसी के पीछे ब्राह्मण, ठाकुरों के खेत बिकते जा रहे हैं। इसके साथ हैं कुरमी, अहीर, नाऊ, धोबी, चमार। ये ही हमारे खेत गिरवी रखते हैं। गाँव के लड़कों की शादी नहीं हो रही है। ये औरतें भांजी मार देती हैं।

पंडिताइन: चुप रह झूठी कहीं की । तू चौधरइान है तो मैं पंडिताइन हूं। साफ बात कह दूं ?

(स्त्रियां इशारे करती हैं, हाथ जोड़ती हैं, 'नहीं ऐसा ने करो'।)

अफसर : मेरी समझ में नहीं आता, ये औरते साफ–साफ बातें क्यों कहना चाहती हैं ? क्या सत्य मैला हो गया है ?

गौरी : इसी का दिल मैला है।

चौधराइन: हत्यारी है।

ठकुराइन : इसका मर्द इसे छोड़कर चला गया है।

नेताइन : पूरा गांव बदनाम है।

अफसर : चुप क्यों हो गयीं ? और बोलिए साफ–साफ। अपने–अपने दिल साफ कर लीजिए।

सीता : बोलो ! अब बोलो न।

चौधराइन: बस इतने से हमारा काम चल जायेगा।

नेताइन : आगे मेरे नेताजी निपट लेंगे।

पंडिताइनः जो सत्य है उसे कोई नहीं मिटा सकता !

नेताइन : मेरे को कहते हैं–सत्य होता नहीं बनाया जाता है।

चौधराइनः लो बन गया। दस्तखत करो साहेब।

अफसर : बाद में।

चौधराइनः अभी।

अफसर : दिल साफ रखो। समझो दस्तखत हो गया।

नेताइन : हमारा दिल साफ है।

अफसर : बस समझो हो गया काम !

चौधराइनः (अलग से) यह भी बदमास निकली, लगता है मिल गयी उससे। कैसी बातें बना रही है !

अफसर : अच्छा अब कजरी का बयान होगा।

सीता : पहले मेरा बयान !

कजरी : नहीं, अंदर जा ! नहीं ? तो इधर मुंह कर चुपचाप खड़ी रह ! (विराम) जिस दिन मेरा पति परदेस चला गया, मुझे लगा गरीबी और सिधाई का क्या मतलब होता है ! जिस दिन से वह ब्याह कर मुझे यहाँ ले आया, हम दोनों दुखी, सबसे डरे–डरे। तब तक मुझे यह पता नहीं था कि यहां मेहनत और परिश्रम को बुरा माना जाता है और उसकी सजा दी जाती है।

नेताइन : साहेब, इसका भाषण रोकिए। यह बड़ी खतरनाक है।

कजरी : डरी मैं नहीं हूं, ये सारी औरतें डरी हुई हैं। एक–दूसरे से। ऊपर नीचे से। नीचे ऊपर से। स्त्री पुरूष से पुरूष स्त्री से और सबसे ज्यादा स्त्री–स्त्री से। न मेरे पास खेत था, न काई काम इस गाँव में। सड़क पर चाय की छोटी सी दुकान की। गाँव वाले लोगों को बताते––यह नीची जात की है, अछूत है। जो ऐसा कहते, वे ही चुपचाप मेरे हाथ की चाय पी जाते। एक दिन शाम को इसका मर्द, इसका बेटा, इसका पति...सबने मुझे घेर लिया। गोहार मचाई। पैरों पर गिरी, चीखी, गिड़गिड़ाई, पर कुछ नहीं...कुछ भी नहीं। फिर मैने यह बांक उठा ली...कायर बुजदिल, भाग गये।

(बांक उठाये खड़ी है। वही दोनों भिखारिनें आती हैं।)

हेरी हेरी हेरी हेरी
क्यों घबराये किससे डरना !
हेरी हेरी हेरी हेरी
राह कठिन है बहुत अधेरा
कायर मन ने रास्ता घेरा
हेरी हेरी हेरी हेरी
क्यों घबराये किससे डरना
ढाई अक्षर है प्रेम पिया का
वही है जीना वही है मरना
क्यों घबराये किससे डरना
हेरी हेरी हेरी हेरी.....

दूसरा दृश्य

(दिन का समय। कजरी पतंगें टांग रही है। सीता और श्यामा पतंग उड़ाने की कोशिश में। सहुआइन आतीं है।)

सहुआइनः राम राम ! अरे साहजी कल बंबई जाय रहे हैं। अपने भतार को कोई चीठी–पत्री देगी।

सीता : भतार क्या होता है सहुआइन काकी !

सहुआइनः अरे शादी होगी तो पता चल जायेगा। बोलती क्यों नहीं, बलदाऊ कोई चीठी–पत्री देगी ?

कजरी : नहीं।

सहुआइनः क्यो ?

कजरी : कुछ नहीं।

सहुआइनः मेरे उधार के रूपये ?

कजरी : सबके सामने अपने पति की कसम खायी है तुमने।

सहुआइनः अरे वहां की बात और थी। मुंह से निकल गया। पतंग कितने सुन्दर हैं। किस हिसाब से बेचती है ? एक पतंग का क्या दाम ?

सीता : ढाई रूपये दो रंगी। दो रूपये इकरंगी।

सहुआइनः हाय ! इतने महंगे।

सीता : अपनी दुकान पर जब तीन का तेरह लेती है तब महंगा नहीं रहता।

सहुआइनः तू चुप रह ! ऐसा कर कजरी, हर महीने हमें पचास पतंग दे दिया कर एक रूपये के हिसाब से। छः महीने में सारा उधार सूद मूल समेत पट जायेगा।

सीता : एक पतंग एक रूपया ? तुम्हारा दिमाग तो नहीं फिर गया ! जाओ जाओ, हां नहीं तो।

सहुआइनः अच्छा सवा रूपया...डेढ़ रूपया। पौने दो।

कजरी : चलो ढाई वाला तुम्हें दो में।

सीता : एक दिन में दो पतंग बनाती हूं। कितनी अच्छी है। दो रूपये में नहीं दूंगी। मिट्टी के तेल में पानी मिलाकर बेचती है।

सहुआइनः जबान सम्हाल कर बोल, हाँ।

कजरी : तुम लोग कभी जबान सम्हाल कर बोलती हो ? बच्चे जैसा सुनेंगे वैसा बोलेंगे।

सहुआइनः सिर पर चढ़ा रखा है। फल पाओगी, हां।

कजरी : क्यों हरदम श्राप देती हो। ये लो दस पतंग। बीस रूपये।

(पतंग देकर कापी पर दस्तखत लेती है।)

सहुआइनः अरे कोई संदेसा देगी ?

कजरी : वहां न जाने कितने संदेसे पंहुचते रहते हैं।

सहुआइनः मेरे साहजी ऐसे नहीं हैं। बंबई जा रहे हैं अपने काम से दस दिन के भीतर लौट आयेंगे।

सीता : (प्रसन्न) मेरे बप्पा से मिलेंगे ?...सच ? बप्पा से कह देंगे कि फौरन आ जाओ। उनकी मुझे हरदम याद आती है। गांव की औरतें मेरी माई के खिलाफ जो झूठी–झूठी बातें लिख भेजती रहती हैं, उन पर कभी विश्वास नहीं करेंगे। मरे लिए कपड़े। श्यामा, उसे क्या कहते हैं, हां वही क्या बेलबाटम, टाप और उसका क्या नाम है ? अच्छा, बप्पा की चिट्ठी लिखती हूं।

कजरी : कितनी चिट्ठियां लिखीं, कभी कोई जवाब आया ?

सीता : मेरे बप्पा को मिलती ही नहीं होंगी।

कजरी : वाह रे तेरा बप्पा।

(सीता चिट्ठी लिखने बैठ गई है।)

सहुआइनः अच्छा रे सीता, चिट्ठी दे जाना।

(सहुआइन जाती है।)

सीता : (चिट्ठी लिख रही है) माई डियर बप्पा...नहीं नहीं, डियर डैडी !

कजरी : डैडी नहीं, तेरा सर ! हिन्दी में लिख। बड़ी आयी है अंगरेजी वाली !

सीता : बप्पा को लिख दूंगी, माई बहुत डांटती है।

कजरी : हां, तू भी लिख दे !

सीता : हाय, ऐसे क्यों बोलती है माई। मेरी प्यारी माई। हंसो..एक बार.हंसना !

कजरी : श्यामा, घर जा, मां अकेली होंगी।

श्यामा : हमारे घर कुल सात जने हैं। लोग आते–जाते भी रहते हैं। अकेली तो सचमुच तुम हो काकी !

कजरी : यह तो कीमत है बेटी !

श्यामा : किसकी ?

कजरी : यह ले पतंग। नहीं, पकड़ यह डोर। पतंग कितनी अकेली उड़ती है इतने ऊंचे–इतने ऊपर–डोर में बंधी है न।

(हंसने लगती है।)

सीता : माई ! शोर मत कर !

(दोनो हंसती है।)

सीता : श्यामा। बेवकूफ !

(हटकर बैठती है।)

श्यामा : कोई आ रहा है।

(शोध छात्रा आती है। पीछे–पीछे गांव की स्त्रियां।)

छात्रा : आप लोग मेरा आजू–बाजू क्यों आता है ? हम इस माफिक भीड़ बिलकुल नहीं मांगता हमारा 'मूड' मत बिगाड़ो। हम बहुत दूर से आया है। कमाल है, तुम इतनी सारी लेडीज को कोई काम नेही है। बाबा हमको अकेला जाने दो, हम 'रिसर्च स्कालर' है–शोध छात्रा–खोजी।

चौधराइन: ओ जी ! खोजी !

छात्रा : नमस्ते। हमको अपना काम करने दो।

नेताइन : हमसे मिलकर जाइएगा। असली बात हम बतायेंगे।

छात्रा : जरूर ! जरूर !

(औरतें एक किनारे अदृश्य हो जाती हैं।)

छात्रा : नमस्ते श्रीमती कजरी बाई।

(औरतों की हंसी)

छात्रा : ओहो, आप लोग क्या करता। हमको काम नेहीं करने देगा ? जाओ। जाओ। हां, ये औरतें हंस क्यों पड़ी ?

सीता : आपको देखकर !

छात्रा : तुम्हारा नाम !

श्यामा : श्यामा !

छात्रा : तुम्हारा ?

सीता : मिस सीता !

छात्रा : औरतें क्यों हंसीं ?

कजरी : आपने मुझे कजरी बाई कहा।

छात्रा : ओ हमसे गलती हुआ। गुजरात–महाराष्ट्र में बाई का मतलब बहन होता है–मां होता है।

कजरी : बैठिए। (बैठने को आसन देती है) आपका परिचय ? इधर कैसे आना हुआ ?

छात्रा : मैं गुजरात–अहमदाबाद से आयी हूं। मेरा नाम कुमारी अंजना जोशी है। गुजरात यूनिवर्सिटी में रिसर्च...खोज... समाजशास्त्र इस गांव के बारे में तुम्हारे बारे में थोड़ा अखबार में पढ़ा। बहुत 'इन्टरस्टिंग केस हिस्ट्री' है–माफ करना बाई–सॉरी, बहिन, दीदी हम सात साल इंग्लैंड में रहा, हमारी भाषा खराब हो गयी।

(औरतों की हंसी)

सीता : मेरी मां तुम्हारे लिए 'केस' है ?

कजरी : बेटी।

छात्रा : नाराज हो गयी। 'इन्टरस्टिंग'।

सीता : माई, चिट्ठी देने जा रही हूं।

(श्यामा और सीता का जाना)

छात्रा : आप देखना चाहती हैं, अखबार में आपका फोटो निकला है। बहुत लंबा लेख है आप पर। देखिए....।

(औरतें आकर चुपचाप देखती हैं। छात्रा घूरकर देखती है। वे जाती हैं।)

छात्रा : आप कमाई करती हैं....

कजरी : पतंग बनाकर, कपड़े सिलकर, गाना–नाच सिखाकर...। (छात्रा टेप रिकार्डर का माइक पास ले जाती है।) देखिए मेरे काम में रूकावट मत डालिए। आप अपना काम कीजिए। मुझे अपना काम करने दीजिए।

छात्रा : हम इसका 'पेमेन्ट' कर देगा।

(हंसी)

(कजरी अंदर जाती है। छात्रा कैमरा निकाल कर फोटो खींचने लगती है। स्त्रियां दिखायी देती हैं– पहले दूर, फिर पास आती हैं फोटो खिचवाने के लालच में।)

छात्रा : हो गया। हो गया। पीछू जाओ। पीछू जाओ। ओ बाबा हम बोला––यहां से जाओ। तुम लोगों को कोई काम नेहीं है क्या ?

(कजरी एक हाथ में प्लेट। दूसरे हाथ में गिलास लिए हुए। उसे देखते ही स्त्रियां भाग जाती है।)

छात्रा : इन्हें काम नहीं है ?

कजरी : यही काम है इनका।...बेचारी।...लीजिए जलपान कर लिजिए।

छात्रा : माफ कीजिए हम इधर का पानी नेहीं पी सकते। पेट खराब हो जाता है। हमारे पास खाने–पीनेको है, धन्यवाद।

(कजरी रख देती है।)

छात्रा : अपको गाने–नाचने की ट्रेनिंग कहां और कैसे मिली ?

(कजरी एक पत्रिका लाकर देती है।)

कजरी : पढ़ लीजिए, इसमें सब लिखा हुआ है।

(छात्रा पढ़ती है। सीता आकर देखती है।)

सीता : माई, बप्पा के लिए तुम भी एक चिट्ठी क्यों नहीं दे देती ?

कजरी : ले पतंग बना। मैं खाना बनाने जाती हूं।

छात्रा : मैं आपके साथ अंदर आ सकती हूं ? 'माइक्रो स्ट्रक्चरल चेंज' अपनी आंखो से देख सकती हूं।

कजरी : भीतर बहुत मच्छर हैं आपको मलेरिया हो जायेगा।

छात्रा : नेहीं नेहीं, हम बाहर से ही झाँक कर देख लेगा।

(भीतर झांकना फोटू लेना)

छात्रा : एक सवाल का उत्तर बता दो, हम चला जायेगा।....एक गांव, सत्तीचौरा गांव के आदमियों की शादी क्यों नहीं होती ? 'दिस इज़ आर्थोजेनेटिक प्रोब्लम–।'

(सीता आती है।)

(स्त्रियां तेजी से निकलती हैं।)

चौधराइन: ज्यादा अंगरेजी में गिटिर–फिटिर मत करो हाँ।

सब : हां, नहीं तो।

छात्रा : नहीं नहीं, हम तो अपने याददाश्त के लिए लिख रहा था।

कजरी : आपके सवाल का उत्तर यह दे देंगी।

(कजरी अन्दर जाती है।)

छात्रा : आप लोग शांती से बैठ जाइए। हां अब बताइए– इस गांव के लोगों की शादी क्यों नहीं होती ? यह समस्या कब से शुरू हुई ?

ठकुराइन: इस लड़की को यहां से हटा दीजिए, हम सब साफ–साफ बता देंगे।

चौधराइन: ऐ सीता, जा अन्दर जा। जा, भाग।

सीता : क्यों ? तुम्हारे बाप का दरवज्जा है ?

छात्रा : वाह !

(फोटो लेती है।)

नेताइन : यह समस्या हुई जब से कजरी इस गांव में आयी।

मंगली : यह झूठ है। ब्राह्मण–ठाकुरों के ही यहां शादी नहीं आती। बाकी सब जातियों में धड़ाधड़ शादि आती है।

(छात्रा टेप कर रही है।)

छात्रा : ऐसा क्यों ? आप लोग शांत रहिए माता जी। इन्हें बता लेने दीजिए।

चौधराइन: खबरदार मुझे जो माता जी कहा ! बुरा मानते हैं।

छात्रा : हां आप बोलिए, कौन क्यों बुरा मानता है।

चौधराइन: वही !

छात्रा : वही कौन ?

सीता : वही माने चौधरी....यहां की औरतें अपने पति का नाम नहीं लेतीं।

छात्रा : ओ 'वेरी इन्ट्रस्टिंग प्वाइन्ट' ओ, अगर हस्बैंड चौधरी है तो ये चौधराइन––इनकी अपनी कोई पर्सनाल्टी नहीं हैं ?

सीता : तभी तो ये ऐसी हैं।

चौधराइन: चुप रहा ! यह गलत है। मैं चौधराइन हूं तभी मेरा पति चौधरी है।

छात्रा : ओह 'इन्ट्रस्टिंग'....हाँ, आप क्या कह रही थीं ?

मंगली : इस गांव में बड़ों की शादी इसलिए नहीं होती कि उनमें न करम है न धरम है।

ठकुराइन: तेरी यह हिम्मत।

(स्त्रियों में झगड़ा। छात्रा जान बचाकर भागती है। शोर सुनते ही हाथ में बांक लिये कजरी आती है। मंच सूना है। पृष्ठभूमि से स्त्रियों के झगड़ा करने का शोर सीता आती है।)

सीता : (हंसती हुई) बड़ मजा आया।

कजरी : मैं समझी कि––।

(सीता अंदर जाती है। कजरी कपड़ा उठाती है। उसी समय भागी हुई छात्रा आती है।)

चौधराइन: खोजी इधन आयी है ?

कजरी : खोजी ?

ठकुराइन: अरे वही केमरा वाली।

नेताइन : लड़ते हुए हमारा फोटू खींच लिया।

कजरी : इधर कोई नहीं आया।

चौधराइन: उसने हमको क्या समझ रखा है।

ठकुराइन: मर्दों को दोड़ाओ। चलो––।

(जाती है। छात्रा डरी हुई आती है।)

छात्रा : 'ओ माई गाड'। ये 'लेडी' लोग कैसा है ?

कजरी : देख लिया ?

छात्रा : आप यहां कैसे रहता है ! 'लेडीज' इतना 'क्रुएल' हो सकता है।

कजरी : अपनी उदासी, निराशा, गुस्सा उतारने के लिए स्त्री को एक औरत चाहिए और औरत को बच्चा !

छात्रा : माफ कीजिए मैडम, मेरे रिसर्च का विषय यह नहीं है। आप मेहरबानी करके मुझे किसी तरह छिपा कर इस गांव से बाहर––हम आपको 'पेमेन्ट' कर देगा। 'पेमेन्ट' न सही, इनाम दे देगा। ओ0के0––

(कजरी उसे देखती रह जाती है।)

तीसरा अंक

(कजरी का सूना दरवाजा। सीता दौड़ी हुई आती है।)

सीता : माई !–माई–देख बप्पा की चिट्ठी आयी। माई ! देख मेरे बप्पा ने क्या भेजा।

(पुकारती हुई भीतर देख आती है। कहीं माई नहीं है।)

सीता : माई ! कहाँ गयी ?

(कजरी दिखती है।)

सीता : माई ! (गले लग जाती है) देख माई, मेरे बप्पा की चिट्ठी। तेरे लिए ये कपड़े। मरे लिए यह। तेरे लिए सिंदूर की डिबिया, टिकुली। मेरे लिए इतने सारे कपड़े।

(कजरी चुपचाप पत्र पढ़ने लगी है। सीता सामान लेकर भागती है।)

कजरी : (पत्र पढ़ रही है।)

(वही दोनो भिखारिनें गाती हुई आती है।)

कजरी के बन में बैठी नगिनियां
भौंरा अरे रस भौंरा
पतली कमर लंबे केस
डसै नगिनियां वहि देस
बेदरदी कजरी के बन मति जा

(कजरी आकर उन्हे भिक्षा देती है। और फिर पत्र पढ़ने में डूब जाती है।)

कजरी : अच्छा, यहां की औरतों की चिट्ठियां तुम्हें मिलती रही हैं। तुम्हें भी शक है कि हत्या किसने की ! वाह ! वाह रे कजरी के बन में जाने वाले। तो मैं क्या करूं तुम वहां इतनी मुसीबतों में हो। अपनी सचाई, ईमानदारी लेकर परदेस गये हैं। चाटकर खाओ वही। मैं क्यों लिखूं चिट्ठी ? गांव की औरतों की चिट्ठियां पढ़ो, अपने कलेजा ठंडा करते रहो। वाह तुझे भी शक है, वाह रे तेरा शक !

(चिट्ठी फाड़ डालती है। नये वस्त्रों में सीता आती है।)

सीता : माई–––।

(कजरी उसे देखती रह जाती है।)

सीता : कैसी लगती हूं ?

कजरी : हाय ! काई देख लेगा। अंदर जा, अंदर।

सीता : मेरे बप्पा ने भेजे हैं। कोई का डर है क्या ! मैं भी बंबई जाऊंगी बप्पा के पास।

कजरी : अंदर जा। जा अंदर। जाती है या नहीं ?

(सीता सिर हिलाती है। कजरी उसे खींचकर अंदर ले जाना चाहती है। वह विरोध करती है। कजरी उसे मारने के लिए हाथ उठाती है। पर रोक लेती है। किनारे हटकर निःशब्द रो पड़ती है। सीता फटे हुए पत्र के टुकड़ों को उठाती है। और गुस्से से मां की तरफ देखती है। तभी बाहर से मौसी आती है।)

सीता : (प्रसन्नता से दौड़ती है।) ओ मौसी !

(गले मिलती है। कजरी और मौसी का मिलन।)

मौसी : ई का पहन रखा है रे !

सीता : बप्पा ने भेजा है।

(मौसी हंस पड़ती है। कजरी भी हंसती है।)

कजरी : जा पानी ला !

(सीता दौड़कर जाती है।)

कजरी : कितने दिनों बाद कजरी की याद आयी है। कैसी हो ? बड़ी सुन्दर लग रही हो !

मौसी : तुमसे ज्यादा ?

सीता : मौसी, आज तुम्हारा गाना होगा।

मौसी : हाय कितनी सुंदर है मेरी बेटी ! आ जरा काजल लगा दूं....नजर न लगे।

कजरी : बहुत डर लगता है नींद नहीं आती रे।

सीता : फिर वही बात ! मौसी, आज तुम्हारा गाना। माई की नाच––बहिगै राजा पियरतर नदिया !

कजरी : बिलकुल पागल है। कुछ नहीं समझती–बूझती।

सीता : मौसी आज नहीं जाने दूंगी।

कजरी : आज क्या, मैं इसे यहां से अब जाने ना दूंगी ? अकेले...अकेले...बाप रे। रोज वही कपड़े सिलना, वही पतंग बनाना, औरतों से सिर कुटवाना। बोल क्या खायेगी ? कढ़ी–भात....मीठा चावल, हलवा पूरी या....वही....।

मौसी : अरे कुछ भी चलेगा !

सीता : नहीं हम तो रोज वही एक ही खाना खाते हैं।

(कजरी गंभीरता से सीता की ओर देखती है।)

मौसी : मैं जिस वजह से यहां आयी हूं वह तो सूना !

कजरी : तुम्हारी बहानेबाजी यहां नहीं चलेगी। चलो अंदर गप्प मारेंगे।

मौसी : अरे मेरे पास इत्ता वक्त कहां है ! आज ही लौट जाना है।

कजरी : हां रे यहां कौन रहता है !

सीता : मौसी।

मौसी : बात यह है कि तेरे बहनोई बीमार पड़े हैं कलकत्ते में। अस्पताल में हैं। कोई आगे पीछे नहीं। कल ही रात की गाड़ी से जाना है। गांव के कुछ लोग जा रहे हैं, उन्हीं के साथ चली जाऊंगी !

कजरी : जो जैसा बोये वैसा काटे ! तुम क्या करोगी वहां जाकर ?

मौसी : क्या करूं जाना ही होगा।

कजरी : तुमसे पूछ कर गये थे ? परदेस जायेंगे। शहर का मौज लूटेंगे। परदेस का जगर–मगर भगोड़े–अभागे। जब से गये कभी देखने आये ?

मौसी : पैसे तो भेजते रहे।

कजरी : पैसे ? पेट काटकर। फुटपाथी पर सोकर। भिखमंगों जैसी अभागी। जिन्दगी जीकर। भागकर जायेंगे कहां, सच्चाईयों से बच जायेंगे...परदेस जायेंगे। अपने देस में कौन रहेगा ? अकेली औरतें ? अकेला मर्द। अकेली औरत ! आग लगे ऐसे कजरी बन में। तेरी जगह मैं होती तो नहीं जाती।

मौसी : मरन देती ?

कजरी : हम नहीं मर रहे ?....अकेली पहिया से गाड़ी नहीं चलती।

मौसी : चल अंदर चल।

कजरी : तू मुझे छोड़कर नहीं जायेगी न ?

मौसी : तेरे पास सीता है न ?

कजरी : यह भी चली जायेगी !

(सब परस्पर देखती रह जाती हैं।)

दूसरा दृश्य

(घाट का दृश्य। स्त्रियां बैठी हंसी–मजाक कर रही हैं। नेताइन हाथ में कोई कागज लिये आ रही हैं।)

चौधराइनः क्या है नेताइन ?

(कपड़ा धोने कजरी आ रही थी। देखकर अपने–आप को छिपा लेती है।)

ठकुराइन : बात क्या है, दोड़ी आ रही हो !

नेताइन : देखो चिठ्ठी आयी है बलदउआ की। वह आ रहा है।

सब : आ रहा है !

(सब चिट्ठी देखने लगती हैं।)

चौधराइनः लो पढ़कर सुनाइ दो।

नेताइन : (पढ़ती हुई) परम पूज्य नेताइन काकी, ठकुराइन मौसी, चौधराइन भाभी ! पांव लागी !

चौधराइनः हाय, कितना अच्छा आदमी है बलदाऊ !

ठकुराइन : न जाने कहां उसके भाग में यह कजरी मिल गयी।....हां।

नेताइन : आप सबकी तरफ से चिट्ठी मिली सब समाचार पाकर बहुत दुख हुआ। भला आप लोग झूठ क्यों लिखेंगी। मैं इसी चैत रामनवमी से दो दिन पहले गांव आ रहा हूं। साहू यहां आये थे। वह भी कजरी के बारे में अच्छी बातें नहीं कह रहे थे। मुझे भी शक है कि....आगे लिखकर काट दिया है।

ठकुराइन : देखूं क्या लिखकर काटा है।

(देखती है।)

नेताइन : अरे उसे भी शक पड़ गया है कजरी के चाल–चलन पर।

चौधराइनः सुनो, ऐसा करेंगे––बलदाऊ को हम पहले ही सब बता देंगे।

नेताइन : उसे यहीं लायेंगे। सब पक्का कर दिया है। बलदाऊ बहुत नाराज हैं।

चौधराइनः बड़ा चरित्रवान है।

ठकुराइन : बचपन में मेरे यहां भैंस चराता है।

चौधराइनः मेरा हलवाहा था।

नेताइन : ऐसी औरत का मुंह नहीं देखगा बलदाऊ, हाँ। ऐसा वैसा आदमी नहीं है। हाँ ? बस गुस्सा आ जाय उसे।

चौधराइनः वह काम हम पूरा कर देंगे।

(कजरी दिखती है।)

सहुआइनः आ रही है !

(कजरी आकर कपड़े धाने लगती है। बिलकुल चुप्पी का वातावरण)

चौधराइनः क्या हाल चाल हैं रे !

ठकुराइन : सुना है, बलदाऊ आइ रहा है।

नेताइन : साहुजी बता रहे थे, बहुत नाराज है।

चौधराइनः क्यों नहीं, कोई भला आदमी कैसे सहेगा।

ठकुराइन : तेरा भला इसी में है कि उसके आने से पहले भाग जा यहां से।

कजरी : क्यों तेरे भरतार को लेकर भाग जाऊं ?

ठकुराइन : चुप रह। मुंह झौसी।

कजरी : बड़ी दूध धूली हो ! नौ चूहे खाइके बिलार भई भक्तिन !

नेताइन : आने दे बलदाऊ को !

कजरी : उसे अपना घर बैठा बना लेना। मुफ्त में भैस चरायेगा, हल जोतेगा, पैरा दबायेगा।

ठकुराइन : हम तो तेरे भले की कह रहे हैं।

चौधराइनः हम बलदाऊ को सब साफ बता देंगे।

कजरी : अभी कुछ बाकी है ?

चौधराइनः अरे अभी क्या हुआ। आने दे उसे।

कजरी : चिट्ठी का जबाब तो आ ही गया है।

(स्त्रियां आपस में)

चौधराइनः इसे कैसे मालूम !

ठकुराइन : अंदाज मार रही है।

नेताइन : देखो न, कैसी बनी–ठनी रहती है।
(कजरी जाने लगती है।)
ठकुराइन : अरे कजरी ! सुनती क्यों नहीं है ?
कजरी : अभी कुछ बाकी रह गया है ?
चौधराइन : देखना, अभी क्या हुआ है ?
कजरी : सब देख रही हूं। वह भी देख लूंगी।
चौधराइन : वह नहीं देख पायेगी।
कजरी : वह पेड़ देख रही हूं। उसने छाया के लिए लगाया था। जहाँ मेरा जन्म हुआ था, उस घर के पिछवाड़े एक पेड़ था। मां ने कहा था––आंधी आने से पहले पेड़ को काट डालना।
(चली जाती है।)

चौथा अंक

(कजरी का दरावाजा। पंडिताइन आती है। सीता जमीन पर कुछ बना रही है।)

पंडिताइन : सुना है आज बलदाऊ आ रहा है।

कजरी : आज कौन दिन है।

पंडिताइन : चैत की सप्तमी।

कजरी : अच्छा तो चैत की सप्तमी आज ही है।

पंडिताइन : आज आने वाला है ?

सीता : सगुन हो गया––सगुन हो गया। आप बप्पा जरूर आयेंगे। देख माई, गोबर गणेस ऊपर से डाला तो घर के बीचोंबीच गिरा।

कजरी : हर समय बप्पा बप्पा बप्पा !

सीता : हां बप्पा !...ओ देखो नीलकंठ...।

(बाहर दौड़ती है।)

पंडिताइन : औरतों में खबर है कि आज वह आयेगा। गांव के बाहर राह देख रही है।

कजरी : पता नहीं।

पंडिताइन : तुझे पता नहीं ?

कजरी : कोई और बात करों पंडिताइन।

पंडिताइन : लगता है कि कई दिनों से झारू–बोहारू भी नहीं किया।

कजरी : तबियत ठीक नहीं है।

पंडिताइन : क्याआ हुहै ?

कजरी : सिर घूमता है। किसी काम में जी नहीं लगता। भीतर कुछ जलता है। कई दिनों से कोई काम नहीं किया। लगता है अब मुझसे काम नहीं होगा। कोई और बात करो। चुप रहना मुझे खराब लगता है।

पंडिताइन : कम बोलना...चुप रहना...यह तो तेरा स्वभाव रहा है।

कजरी : स्वभाव लेकर क्या चाटूंगी। ईमानदारी आत्मसम्मान से रहना चाहो तो अकेला हो जाना पड़ता है।

पंडिताइन : बलदाऊ क्या ठकुराइन, चौधराइन, नेताइन को बातों पर विश्वास करेगा।

कजरी : कमजोर जब चरित्रवान होने का ढोंग करता है, तो वह खतरनाक हो सकता है।

पंडिताइन : बलदाऊ के बारे में ऐसा सोच रही है। ना ना वह ऐसा नहीं हो सकता।

कजरी : देखूंगी।

पंडिताइन : वह गांव की औरतों के बारे में खूब जानता है।

कजरी : नहीं, वह सिर्फ मर्दों के ही बारें में जानता है।

पंडिताइन : सांझ हो गयी। आज नहीं कल आयेगा। चलूंगी रे !

(सीता आती है।)

सीता : बप्पा अब तक नहीं आये।

पंडिताइन : तेरे बप्पा अब कल आयेंगे।

सीता : ऊं...ऊं....बप्पा से नहीं बोलूंगी।

कजरी : तेरे पास चिट्ठी आयी थी कि वह आज आयेंगे ?

सीता : नेताइन के पास आयी थी।

कजरी : तो नेताइन के पास आयेंगे तेरे बप्पा।

सीता : ऐसी बात माई तू कयों करती है ?

कजरी : जाकर उन्हीं से पूछ।

सीता : बड़ी आयी हैं नेताइन, चौधराइन....

(तेजी से फिर जाती है।)

पंडिताइन : अंधेरा हो गया, चिराग जला दे !

कजरी : क्या होता है चिराग जला कर ?

पंडिताइन : मैं जला दूं !

कजरी : नहीं, बैठो। अभी देर है।

पंडिताइन : अब चलूंगी। कल आऊंगी।

(श्यामा दौड़ी आती है।)

श्यामा : बलदाऊ काका आ गये !

पंडिताइन : कहां हैं ?

सीता : मेरे बप्पा आ गये !

(दौड़ती है)

पंडिताइन : कहां देखा ? कहाँ है ?

सीता : नेताइन के घर में बैठे है...ठकुराइन चौधराइन, सहुआइन...

पंडिताइन : उसके कान भर रही होंगी––चल देखती हूं अभी। चल....

(दोनों तेजी से जाती हैं। कजरी उठती है एक क्षण शून्य में देखती है फिर बढ़कर बांक उठा लेती है।)

कजरी : छिनार औरतों की बातों में आकर तू मुझे सजा देगा ? भगोड़ा ! शक्की! डरपोक ईमानदार। ये झूठी बेरहम, कामचोर, अपने मर्दों और बच्चों से नफरत करने वाली, इनकी बातों पर मेरा पति विश्वास करे और मुझ पर शक.....तेरे अन्याय के पहले मैं कर दूंगी न्याय ! (पत्थर पर बांक की धार तेज करने लगती है।) प्यार किया है, कोई घास नहीं काटा है। तु नहीं रहेगा, तो क्या फरक पड़ता है। आखिर इतने वर्षों से कौन था मेरे साथ सिर्फ वही लड़ाई, बदनामी, नफरत और अपमान....और कौन था मेरे साथ ?

(सीता दौड़ी आती है।)

सीता : माई, बप्पा आ गये।

(कजरी बांक को छिपा लेती है।)

कजरी : खबरदार, मेरे पास कोई न आये।

सीता : माई।

कजरी : तेरे बप्पा पिछवाड़ें से घर में क्यों घुसा ?

सीता : औरतें पीछा कर रही थीं।

कजरी : औरतें मेरा भी पीछा करती रहीं।

सीता : उनसे पीछा छुड़ाकर पिछवाड़े के रास्ते से आना पड़ा।

कजरी : कायर....शक्की !

सीता : माई भीतर आवो। बप्पा बुला रहे हैं।

(स्त्रियों की असंख्य बातें उसके कानों में टकरा रही हैं।)

कजरी : खबरदार, जो वह मेरी नजरों के सामने पड़ा। खबरादार...!

(सीता चिराग जलाती है। कजरी मुंझ से बुझा देती है।)

सीता : माई।

कजरी : खबरदार जो मुझे माई कहा !

(सीता अन्दर जाती है। भीतर से आवाज आती है बलदाऊ की)

आवाज : कजरी ! ओ कजरी !

कजरी : सुन वे औरतें क्या बातयेंगी। मैं बताती हूं तुझे। हाँ, हाँ उस मुसाफिर की हत्या की मैंने। परदेसी समझकर जल पिलाया। भोजन परोसते हुए उसने मेरा हाथ पकड़ लिया––ओह अपनी जड़ से टूटकर परदेसी इतना दरिद्र और गुलाम हो जाता है अपनी भूखों का। मैंने कहा चुपचाप खाना खा ले। पर वह विश्वासघाती, कायर, उसने मुझे अबला, अकेली स्त्री समझ कर जैसे हर औरत मर्द मुझे समझने की गलती करता रहा है,....गले से दबोचकर उसे हमेशा के लिए चुप कर दिया।...मैं हर क्षण तुझे जीती रही सीता का बप्पा, अब तुझे मार दूंगी, क्या फर्क पड़ता हैं। तब अकेली थी, अब सदा अकेली रहूंगी।

आवाज : कजरी !

कजरी : नहीं। बिलकुल नहीं।

आवाज : तू भी मेरा अपमान करेगी सीता की मां !

कजरी : क्या ? यह क्या कह रहा है ? सीता की मां !

(तभी सुन्दर कपड़ो में सजी–संवरी सीता आती है।)

सीता : ले माई। बप्पा ले आये हैं।

(कजरी चिराग जला कर देखती है।)

कजरी : ये कपड़े किसने पहनाये ?

सीता : बप्पा ने।
कजरी : चोटी किसने की ?
सीता : मेरे बप्पा ने !...ले मां टिकुली लगा ले। कितनी सुदर है। मैं लगा लूं माई ?
कजरी : बक् सुहागन लगाती हैं।
आवाज : सीता की मां !
(संगीत बजने लगता है।)
कजरी : सीता की मां ! आह!
(सीता, मां को देखती है। कजरी उसे पकड़ कर अपलक देखती है और हाहाकार कर उसे अपने अंक में बांध लेती है। पृष्ठभूमि में वही कजरी बन का संगीत फैलता है।)
कजरी : रूको आती हूं।
(माथे पर टिकुली। मांग में सिंदूर लगाकर दर्पण में अपने–आप को देखने लगती है। संगीत फैल जाता है।)

परदा

□□□

आकादेमी पुरस्कार विजेता

लक्ष्मीनारायण लाल

आधुनिक, वर्तमान हिन्दी साहित्य के परम सम्मानित–महत्तवपूर्ण नाटरकार, विशिष्ट कथाकार और साहित्य के विभिन्न अंगों के मर्मश और सृजनकर्ता।

जन्म : चार मार्च, उन्नीस सौ सत्ताइस।

जन्म स्थान : उत्तर प्रदेश, बस्ती जिले के जलालपुर गांव में।

शिक्षा : एम.ए. (1950), डॉक्ट्रेट (1952) इलाहाबाद, दिल्ली वि0विद्यालय में अध्यापक रहे, अकाशवाणी में ड्रामा प्रोड्यूसर रहे, नेशनल बुक ट्रस्ट में सम्पादक। सन इकहत्तर से स्वतंत्र–लेखन।

अपने 'मैं' से आगे, अपने व्यक्ति समाज, देश और काल से पूर्णतः संलग्न और प्रतिबद्ध रचनाकार। संगीत, नृत्य, राजनीति, रंगमंच में गहरी रूचि। सर्वप्रिय है 'देखना' और उसका अभिन्न अंग हो जाना। संकल्प है हर क्षण जीना–कर्त्ता और भोक्ता होकर सृजनकर्ता रहना।

□□

लक्ष्मीनारायण लाल का साहित्य

कहानी संग्रह – सुने आंगन रस बरसै, एक बूंद जल, एक और कहानी, डाकू आये थे।

उपन्यास – बया का घोंसला और सांप, काले फूल का पौधा, बड़ी चंपा टोटी चंपा, रूपाजीवा, मनवृन्दावन, प्रेम अपवित्र नदी, हरा समुंदर गोपीचंदर, श्रृंगार, वसन्त की प्रतीक्षा, देवीना।

एकांकी संग्रह – ताजमहल के आंसू, पर्वत के पीछे, नाटक बहुरूपी, नाटक बहुरंगी, दुसरा दरवाजा, खेल नहीं नाटक।

नाटक – सुंदर रस, रातरानी, दर्पन, रक्तकमल, मादा कैक्टस, सुखा सरोवर, कलंकी, मिस्टर अभिमन्यु, सूर्यमुख, करफ्यू, अब्दुल्ला दीवाना, एक सत्य हरिशचन्द्र, नरसिंह कथा, व्यक्तिगत, सगुन पंछी, गंगामाटी, सबरंग, मोहभंग, पंच पुरूष, राम की लड़ाई, कजरी बन, अंधा कुआं, यक्ष–प्रश्न।

जीवनी – जयप्रकाश { अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं में }

अनुसंधान– हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास, पारसी हिन्दी रंगमंच, रंगमंच और नाटक की भूमिका, आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच।

चिन्तन और विचार – निर्मूल वृक्ष का फल–भारतीय राजनीति का चरित्र।

प्राप्ति–स्थान :

लिपि प्रकाशन, 1 अन्सारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002

हिन्दी बुक सेण्टर, 4/5 बी आसफअली रोड, नयी दिल्ली–110002